PAGE NO.
DATE / /

संवाद लेखन

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। इस वैज्ञानिक युग मे विविध प्रकार के जनसंचार माध्यम विख्यात हो चुके है जिनसे हम विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते है। इन जनसंचार माध्यमो मे श्रव्य व दृश्य-श्रव्य दोनो प्रकार के माध्यम आते है। इसमे रेडियो समाचार-पत्र, टेलीविजन इंटरनेट आदि प्रमुख है जिनसे मानव को देश-विदेश की जानकारी प्राप्त हो जाती है।
समाचार-पत्र टेलीविजन रेडियो आदि मे संवाद का बहुत महत्व है क्योकि संवाद लेखन जितना प्रभावशाली होगा, वह जनसंचार माध्यम मानव को आकर्षित करने मे भी सक्षम होगा।

संवाद शब्द का अर्थ :-

संवाद शब्द सम् तथा वाद् के योग से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है- वार्तालाप या बातचीत आदि। कहीं-कहीं समाचारों के लिए भी संवाद शब्द का प्रयोग किया जाता है। साहित्य की अनेक विधाएं है- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि। इन विधाओं की रचना करते समय प्रायः साहित्यकार इनके पात्रो के भावो, विचारो, अन्तद्वन्द्वो, मनोदशाओ आदि को अभिव्यक्त करता है। यद्यपि साहित्यकार को यह छूट होती है कि वह स्वेच्छा से विवरणात्मक शैली मे भी पात्रो के इन विचारो आदि को अभिव्यक्त कर सकता है परन्तु ऐसा करने से उनकी कृति न तो रोचक बन सकती है और न ही बोधगम्य। इसका मूल कारण यही है कि संवादात्मक शैली अर्थात् पात्रो के परस्पर वार्तालाप के माध्यम से वह कृति को जितना बोधगम्य, रोचक व स्वाभाविक बना सकता है, उतना विवरणात्मक शैली से नहीं। पाठक भी पात्रों के संवादों के माध्यम से उनके भावो, विचारों, व्यक्तित्व आदि को सहजता से समझ लेता है। अतः संवाद-लेखन प्रक्रिया मे प्रयुक्त 'संवाद' शब्द से तात्पर्य उस वार्तालाप से है, जो किसी दृश्य-श्रव्य

Scanned with CamScanner

विधा में चित्रित पात्रों के मध्य होता है।

संवाद-लेखन – यहाँ हम रेडियो संवाद लेखन व टेलीविजन संवाद लेखन के विषय मे चर्चा करेंगे, जो इस प्रकार से है—

1. रेडियो संवाद लेखन –

रेडियो साक्षर-निरक्षर, नेत्रहीन-नेत्रयुक्त, बड़े-बूढ़े सभी व्यक्तियों को नवीनतम घटनाओं की जानकारी देने का लोकप्रिय जनसंचार माध्यम है। यह कम से कम समय मे अत्यधिक महत्वपूर्ण समाचारों को विश्वसनीयता से प्रसारित करने वाला सशक्त माध्यम है। रेडियो के लिए लेखन का अभिप्राय है- कान के लिए लिखना। रेडियो के लिए लिखना अत्यन्त कौशल का कार्य है। रेडियो पर पन्द्रह, दस और पाँच मिनट के लिए प्रसारित होने वाले बुलेटिनो में समाचार नपे-तुले शब्दों में पढ़ना पड़ता है। अत: इस प्रकार रेडियो के लिए लिखा जाना चाहिए जो बोला जा सके व उसे सरलता से समझा जा सके। समाचार-पत्र में समाचारों को आँखों के द्वारा पढ़ा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की समाचार पढ़ने की अपनी गति होती है। पढ़ने के बाद उस पर गहराई से विचार करने का समय भी पाठक के पास होता है। समझ न आने पर या संशय उत्पन्न होने पर वाक्य को दोबारा भी पढ़ा जा सकता है परन्तु रेडियो में यह सुविधा नही होती। जो शब्द एक बार मुख से निकल गया, उसकी पुनरावृत्ति नही होती। रेडियो के लिए संवाद लेखन एक चुनौती से भरा हुआ कार्य है। रेडियो के लिए लिखते हुए वाक्य छोटे हों। शब्द ऐसा हो जो सूचना व चित्र प्रस्तुत करने मे सक्षम हो। दोहरे अर्थों वाले शब्दों से बचना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के प्रयोग अर्थ का अनर्थ कर देते है। जिन शब्दों को पढ़ने मे वाचक को कठिनाई हो, ऐसे शब्दों का रेडियो संवाद लेखन में प्रयोग नही करना चाहिए। रेडियो की भाषा मधुर सुन्दर तथा रोचक होने के साथ-साथ स्वाभाविक व सरलता से भी परिपूर्ण होनी चाहिए। भाषा के साथ शैली का भी ध्यान रखना चाहिए। अत: बोले जाने वाले

PAGE NO. 8-
DATE / /

संवाद कमसे-कम शब्दों में अधिकाधिक भावों को सरल व वाक्यों में तथा सुन्दर और श्रुति-मधुर भाषा में होने चाहिए।

(3) टेलीविजन संवाद लेखन -

टेलीविजन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है अतः इसके संवाद साक्षर-निरक्षर सभी लोगों के लिए होते है। कहा जाता है कि एक दृश्य का प्रभाव हजार शब्दों के समान होता है। इस माध्यम के द्वारा दृश्य प्रस्तुत किये जाते जाते हैं अतः यहाँ पर शब्दों का कम-से-कम प्रयोग होता है। टेलीविजन मे दृश्य गतिशील होते हैं अतएव दर्शक स्वयं को वास्तविकता के निकट अनुभव करता है। इस माध्यम मे किसी घटना या दुर्घटना के समाचार को घटाकर या बढ़ाकर-दोनों प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है। इस माध्यम में चित्रों का प्रयोग बड़ी संख्या मे होता है अतः इसके समाचारों या संवादों को बड़े ध्यान से सुना और समझा जाता है।
टेलीविजन के लिए लिखे जाने वाले संवाद संक्षिप्त तथा रोचक होने चाहिए। संवादों मे कठिन शब्दों का प्रयोग न हो। टेलीविजन मे दिखाये जाने वाले चित्र आकर्षक हो तथा संवाद के अनुरूप हो। टेलीविजन के संवादों को आँख और कान को ध्यान मे रखकर लिखा जाना चाहिए। टेलीविजन के लिए लिखने जाने वाले संवाद रोचक, सरल, स्पष्ट व स्वाभाविक होने के साथ-साथ दर्शकों को बाँधे रखनेमें भी सक्षम होने चाहिए।

संवाद लेखन की विशेषताए :-

संवाद लेखन में लेखक को अनेक तथ्यों को ध्यान में रखना होता है। आदर्श व उच्च कोटि के संवादों में निम्नलिखित विशेषताएँ अपेक्षित होती है -

(1) पात्रानुकूलता -

किसी भी अच्छी फिल्म या धारावाहिक के संवाद पात्रानुकूल होते है। पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने वाले संवादों का अपना महत्व है और उनकी चारित्रिक विशेषताओं के अनुरूप लिखे गए संवादों का अपना

Scanned with CamScanner

अत्यंत महत्व है। अतः संवाद लेखन से पहले संवाद-लेखक को फिल्म या धारावाहिक के पात्रों की सभी चारित्रिक विशेषताओं को जान लेना चाहिए। प्रायः सभी फिल्मों, धारा-वाहिकों के पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ भिन्न-भिन्न होती है। कुछ पात्र वीर, साहसी, सत्यनिष्ठ व परोपकारी होते हैं तो कुछ पात्र कुटिल, मक्कार, लोभी, हत्यारे होते हैं। अतः नायक व प्रतिनायक या खलनायक के संवाद ऐसे होने चाहिए जिनसे उनकी चारित्रिक विशेषताओं का आभास हो, उनकी योग्यता, आकांक्षा आदि की पुष्टि हो। उदाहरण के लिए, 'शोले' फिल्म का नायक वीरू अत्यंत साहसी व निर्भीक है। अपने प्रिय दोस्त की हत्या पर वह अकेला ही खलनायक को मारने के लिए जब उसके समूह की ओर बढ़ता है, तब वह ललकार कर कहता है - 'मैं आ रहा हूँ।' यह ललकार उसकी प्रवृत्ति के अनुकूल है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि संवाद-लेखक को पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं के अनुरूप ही उनके संवाद लिखने चाहिए।

2) भावानुकूलता :-

फिल्मों, टी॰वी॰ धारावाहिकों की पटकथा में नाटकीयता रहती है और इनके पात्र प्रायः गतिशील रहते हैं। इनके प्रमुख पात्रों की कुछ विशिष्ट चारित्रिक विशेषताएँ होती है, परन्तु उनकी परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर उनकी भावनाएँ, भाव आदि भी बदल जाते हैं। संवाद लेखक को भावनाओं के अनुरूप ही संवादों की रचना करनी चाहिए। पारिवारिक क्लेश, सामाजिक विषमता, अन्याय, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता आदि परिस्थितियों के कारण पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं में जो परिवर्तन होते हैं उनके मन में जो भावनाएँ उत्पन्न होती है ऐसे दृश्यों में उन भावनाओं के अनुरूप उनके संवाद मर्मस्पर्शी संवाद होने चाहिए।

PAGE NO.
DATE / /

3) संक्षिप्तता :-

जो संवाद संक्षिप्त होते हैं, वे दर्शकों को शीघ्र समझ में आ जाते हैं और वे लंबे समय तक दर्शकों को याद भी रहते हैं। यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर फिल्मों, धारावाहिकों आदि में लंबे-लंबे संवाद भी प्रस्तुत होते हैं परन्तु लंबे संवाद भाषण के समान नीरस व उबाऊ प्रतीत होते हैं। अतः संवाद ऐसे हो जो संक्षिप्त हों। जैसे- फिल्म शोले का एक प्रमुख संवाद- 'कितने आदमी थे?', इसी प्रकार 'मिस्टर इंडिया' फिल्म का संवाद- 'मोगैम्बो खुश हुआ' आदि अपनी संक्षिप्तता के कारण भी अधिक लोकप्रिय हुए हैं।

4) सरलता एवं सहजता :-

फिल्मों आदि के संवाद भावानुकूल होने चाहिए और संक्षिप्त भी, ऐसी दशा में यह आवश्यक नहीं है कि सभी संवाद व्याकरण सम्मत हो। वस्तुतः संवाद-लेखक को उस पात्र की भूमिका में स्वयं ढालकर सोचना पड़ता है और उन अनुभूतियों को अनुभूत करना होता है जिन्हें एक सामान्य व्यक्ति उस विषम परिस्थिति में अनुभव करेगा। ऐसी दशा में उसकी अनुभूति अभिव्यक्त होकर सबकी अनुभूति बन जाती है। अतः संवादों में सरलता एवं सहजता से तात्पर्य यह है कि वे भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो व दर्शकों को भी सहजता से समझ आ जाए।

5) रोचकता :-

फिल्म, धारावाहिक आदि दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा प्रसारित होते हैं। अतः दर्शकों मुख्य रूप से दृश्यों या अभिनेता की ओर अधिक आकर्षित रहता है। ऐसी दशा में संवाद-लेखक का दायित्व बनता है कि वह संवादों को इतने रोचक ढंग से प्रस्तुत करे कि दर्शक उन्हें सुनकर न केवल समझ सके बल्कि उनकी ओर अपना ध्यान भी दे। इसी प्रकार रोचकता भी संवादों का एक अपेक्षित गुण है।

Scanned with CamScanner

6) विषयानुकूलता :-
संवाद-लेखक को पटकथा पढ़ने व पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करने के बाद ही संवाद लिखने चाहिए। इससे उसके संवादों में विषयानुकूलता बनी रहेगी। वस्तुतः जिस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर फिल्म की पटकथा लिखी गई है, उस पृष्ठभूमि व पटकथा के देशकाल एवं वातावरण के अनुरूप संवादों को लिखना ही विषयानुकूलता है।

7) प्रतीकात्मकता :-
कभी-कभी फिल्मों में पटकथा की मांग पर नाटकीयता की रक्षा करने व रहस्यात्मक परिस्थितियों को बनाए रखने के साथ-साथ सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए संवादों में प्रतीकात्मकता का भी समावेश कर दिया जाता है। वैसे भी फिल्मों से जिन भावों या विचारों से दर्शकों, विशेषकर बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़े, उन्हें प्रतीकात्मक शब्दों द्वारा ही अभिव्यक्त करना चाहिए।

8) व्यंग्यात्मक एवं मर्मस्पर्शी :-
दृश्य की आवश्यकता के अनुरूप फिल्मों के संवादों में व्यंग्यात्मकता का भी समावेश किया जाना चाहिए। इससे फिल्म की पटकथा रोचक बनी रहती है। इसके साथ-साथ फिल्मों के संवाद मर्मस्पर्शी भी होने चाहिएँ। जो संवाद दर्शकों के मन-मस्तिष्क को झकझोर देते हैं, उन्हें दर्शक लंबे समय तक याद रखते हैं और उस फिल्म को बार-बार देखते हैं।

उपसंहार :-
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि फिल्म, धारावाहिक आदि के संवाद लिखते समय

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE / /

(7)

संवाद- लेखक को पात्रों के मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक आदि स्तरों, उसके भावों, उसकी परिस्थितियों, चारित्रिक विशेषताओं आदि के साथ-साथ दर्शकों के स्तर, रुचि व मनोरंजन का भी ध्यान रखना होता है। संवाद लिखते समय उसे ध्यान रखना चाहिए कि वे दर्शकों के हृदय को फिल्म के दृश्य के अनुसार उद्वेलित करें ताकि उन्हें समय समय पर वीर रस, हास्य रस, करुण रस, शांत रस, शृंगार रस आदि का आस्वादन हो और वे उन रसों में सराबोर होकर आनंद प्राप्त कर सकें।

Scanned with CamScanner